TheHitavada

Jabalpur City Line | 2019-05-30 | Page- 6

ICFRE to prepare DPR for rejuvenation of 13 major rivers

■ Staff Reporter

MINISTRY of Environment, Forest and Climate Change (MoEF&CC) has assigned Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) to prepare detailed project report (DPR) for rejuvenation of 13 major Indian rivers through forestry interventions. The task for preparation of DPR of river Narmada has been allocated to Tropical Forest Research Institute, (TFRI) Jabalpur. To initiate the work, a consultative meeting is being organized at TFRI, Jabalpur on May 31. Officials from various central and state government departments viz Narmada valley Development authority, Rani Awanti Bai Sagar Project, Irrigation, Forest, Agriculture, and Tourism Department, Madhya Pradesh State Pollution Control and Electricity Board, Fisheries and Tribal Development Department, Indian Bureau of Mines, Zoological Survey of India, Jabalpur, along with Vice Chancellors, Professors and Academicians from different Universities will be participating in the meeting. Significant dignitaries like Rajesh Bahuguna IAS, Divisional Commissioner, Jabalpur, R D Mahala, IFS, Chief Conservator of Forest, Jabalpur and Rajendra Rai, Chief Executive Officer, Jabalpur Development Authority will also be present to participate and share their valuable suggestions during the meeting.

River Narmada with its polluted banks at Gwarighat.

दैनिक भास्कर महानगर जबलपुर. गुरुवार, 30 मई 2019 3

गंगा की तर्ज पर होगा नर्मदा का कायाकल्प

डीपीआर तैयार करने केंद्र व राज्य सरकार के अधिकारी देंगे सुझाव

निज संवाददाता | जबलपुर

गंगा नदी की तर्ज पर देश की प्रमुख 13 प्रमुख नदियों के कायाकल्प के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार कराई जा रही है। इसके अंतर्गत मप्र से गुजरात तक नर्मदा नदी के दोनों

किनारों के हालातों पर चर्चा करने और इसके सरंक्षण संबंधी सुझावों के लिए 31 मई को केंद्र व राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के प्रमुखों की एक बैठक टीएफआईआर में आयोजित की गयी है। बैठक में जो सुझाव आएँगे उस आधार पर परियोजना रिपोर्ट तैयार की जाएगी।

जानकारों के अनुसार केंद्र सरकार के पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने वानिकी हस्तक्षेप के माध्यम से 13 प्रमुख नदियों के कायाकल्प की डीपीआर तैयार करने का कार्य भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद को सौंपी गया है। नर्मदा नदी की रिपोर्ट तैयार करने का कार्य उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान टीएफआईआर जबलपुर के जिम्मे है। इसी कड़ी में जबलपुर में सलाहकार बैठक आयोजित की जा रही है। बैठक में मुख्य रूप से नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, रानी अवंती बाई सागर परियोजना, सिंचाई, वन, कृषि और पर्यटन विभाग, मप्र राज्य प्रदूषण नियंत्रण और बिजली बोर्ड, मत्स्यपालन और जनजातीय विकास विभाग, भारतीय खनन ब्यूरो, जूलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अधिकारियों के अलावा संभागायुक्त राजेश बहुगुणा, सीसीएफ आरडी महला, जेडीओ सीईओ राजेंद्र राय आदि शामिल होंगे।पी-2

पत्रिका PLUS CITYLIVE JABALPUR THURSDAY 30/05/2019 {14

नर्मदा संरक्षण पर मंथन करेंगे वैज्ञानिक और अधिकारी

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

जबलपुर ◆ पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने वानिकी हस्तक्षेप के माध्यम से 13 प्रमुख भारतीय नदियों के कायाकल्प के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट के निर्माण का कार्य भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद को सौंपा है। नर्मदा नदी पर रिपोर्ट तैयार करने का कार्य उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई) को आवंटित किया गया है। कार्य के शुभारंभ को लेकर गुरुवार को सलाहकार बैठक आयोजित की गई है। बैठक में केंद्रीय और राज्य सरकार के विभिन्न विभाग नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, रानी अवंती बाई सागर परियोजना, सिंचाई, वन, कृषि और पर्यटन विभाग, राज्य प्रदूषण नियंत्रण और बिजली बोर्ड, मत्स्यपालन और जनजातीय विकास विभाग, भारतीय खनन ब्यूरो, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अधिकारी शामिल होंगे।

The Hitavada JABALPUR ■ Saturday ■ June 1 ■ 2019 CityLine 5

TFRI holds meeting over preparing DPR for rejuvenation of river Narmada

■ Staff Reporter

ADOPTING holistic approach, a multi-departmental consultative meeting was organized by Tropical Forest Research Institute, Jabalpur to prepare Detailed Project Report (DPR) for rejuvenation of river Narmada through forestry interventions.

Dr. G. Rajeshwar Rao, ARS, Director TFRI welcomed the guests and requested to incorporate scientific and technical suggestions in their respective fields. C. Behera, IFS and Nodal Officer of the project presented overview about the land use pattern around Narmada, scope and objectives of the work. He also briefed about incorporation of successful forestry related models for natural, agricultural and urban landscapes. Experts from various central and state government departments viz., Narmada Valley Development Authority, Rani Avanti Bai Sagar Project, Irrigation, Forest, Fisheries and Agriculture Departments, Madhya Pradesh State Pollution Control and Electricity Boards, and Tribal Development Department, Zoological Surveyof India, Jabalpur along with Vice Chancellor, Professors, Scientists from ICAR institutes like DWR and NBSS&LUP and

Multidepartmental consultative meeting for preparation of DPR for rejuvination River Narmada at TFRI, Jabalpur

Academicians from different Universities shared their views, experiences and constrains about working with regard to Narmada.

Prof. P.D. Juyal, Vice Chancellor, Nanaji Deshmukh Veterinary Science University (NDVS), Jabalpur chaired the session. Dr. Giridhar Rao, PCCF and Director, State Forest Research Institute, Jabalpur suggested to identify perennial nature before identifying the tributaries under study. He also suggested to incorporate plantation of grasses, herbs and shrubs beside trees for restoration of open forests around Narmada. Dr. P. K. Shukla, IFS, Regional Director RCFC, Central region, Jabalpur, gave his valuable suggestions and asked to incorporate ground truthing beside relying on secondary data. Further, He suggested use of indigenous species and incorporation of bamboos, medicinal plants, fodder and fuel-wood species in private land around Narmada. Dr. S. Nayak, Director, Extension services, NDVS University, suggested to incorporate fodder species in the plantations S. K. Sinha, Asst. Director Kanha Tiger Reserve evoked concern about change in land use pattern in the buffer zones of national parks of Madhya Pradesh and incorporation of agroforestry models for moisture conservation measures. Various other officers assured to provide their cooperation and support. Other dignitaries Dr. V.S. Gigimon, HoD, Dharmashastra National Law University, Jabalpur, Dr. R. K. Grover, Jabalpur engineering college, Dr. M.S. Raghuwanshi, NBSS&LUP, ICAR, Nagpur, Dr. Sushil Kumar, DWR and Dr. Sambath, ZSI were also present at the meeting besides officials of M.P. state government forum, PWD, Revenue, Municipal Department Authority, Irrigation engineers etc. Dr. S.D. Upadhyay, JNKVV Jabalpur assured support for various agroforestry and medicinal plant related models to bring non productive grasslands into productive Silvi-pasture systems.

He also assured to share findings of rare endangered species and riparian vegetation work of JNKVV. Various organisations also raised concern about discharge of untreated sewage water in the river and its effect on quality of water, promotion of biogas plants and organic fertilizers to minimise discharge of harmful chemicals in the river and phyto and bioremediation through native species.

The programme was compeered by Dr. Fatima Shirin and vote of thanks was delivered by Dr. P.B. Meshram, Group Coordinator Research, TFRI.

वानिकी के माध्यम से होगा नर्मदा का कायाकल्प

टीएफआरआई में डीपीआर तैयार करने विभिन्न विभागों और शिक्षाविदों की बैठक

कार्यालय संवाददाता | जबलपुर

वानिकी के माध्यम से नर्मदा नदी का कायाकल्प करने की विस्तृत योजना तैयार की जा रही है। योजना की डीपीआर तैयार करने के लिए शुक्रवार को उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई) में विभिन्न विभागों और शिक्षाविदों की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सुझाव दिए गए कि पौधारोपण और नर्मदा नदी में मिलने वाले गंदे पानी पर रोक लगाने से नर्मदा का कायाकल्प हो सकता है।

बैठक की शुरूआत में टीएफआरआई के निदेशक डॉ. जी राजेश्वर राव ने परियोजना के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। परियोजना के नोडल अधिकारी आईएफएस सी. बेहरा ने बताया कि किस प्रकार नर्मदा का कायाकल्प किया जा सकता है। नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर पीडी जुयाल ने कहा कि वानिकी के माध्यम से ही नर्मदा नदी को प्राकृतिक रूप में रखा जा सकता है। राज्य वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. गिरिधर राव ने कहा कि पहले नर्मदा की सहायक नदियों की पहचान की जाए। नर्मदा के आसपास खुले जंगल विकसित किए जाएँ। आरसीएफसी के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पीके शुक्ला ने कहा कि नर्मदा नदी के आसपास निजी भूमि में भी देशी प्रजातियों के बांस और औषधीय पौधे लगाए जाएँ। कान्हा टाइगर रिजर्व के सहायक निदेशक एसके सिन्हा ने कहा कि मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यानों के बफर जोन में भूमि के उपयोग में बदलाव और नमी संरक्षण के उपायों के लिए कृषि वानिकी मॉडल को शामिल करने का सुझाव दिया। बैठक में जेएनकेविवि के डॉ. एसडी उपाध्याय, जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज के आरके ग्रोवर, धर्मशास्त्र नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के डॉ. वीएस जीजोमन और एनबीएसएस के डॉ. एमएस रघुवंशी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. फातिमा शिरीन और धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. पीबी मेश्राम ने दिया।

बैठक में ये भी रहे शामिल - नर्मदा के कायाकल्प की डीपीआर तैयार करने के लिए आयोजित बैठक में नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, रानी अवंती बाई सागर परियोजना, सिंचाई, वन मत्स्य और कृषि विभाग, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, बिजली बोर्ड, आदिवासी विकास विभाग, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अलावा विभिन्न शिक्षा संस्थानों के प्रमुख शामिल हुए।पी-3

कार्ययोजना टीएफआरआई में 'नर्मदा नदी' के कायाकल्प की परियोजना पर चर्चा, वैज्ञानिकों ने दिए सुझाव

नर्मदा को संरक्षित करने आसपास के जंगल बहाल करना जरूरी

जबलपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

वानिकी के माध्यम से नर्मदा नदी का कायाकल्प करने विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) भी बनेगी। उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई) में शुक्रवार की सुबह यह डीपीआर बनाने से पहले बहुपक्षीय परामर्श बैठक हुई। इसमें वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों ने नर्मदा को संरक्षित करने इसके आस-पास के जंगल बहाल करने पर प्रमुख रूप से चर्चा की।

इससे पहले टीएफआरआई निदेशक डॉ. जी राजेश्वर राव ने वैज्ञानिक और तकनीकी सुझावों को शामिल करने का अनुरोध किया। परियोजना नोडल अधिकारी सी. बेहरा ने नर्मदा के चारों ओर की भूमि उपयोग, कार्य के दायरे और उद्देश्य प्रस्तुत किए। उन्होंने प्राकृतिक, कृषि और शहरी वानिकी संबंधित मॉडल के समावेश के बारे में भी जानकारी दी। नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर पीडी जुयाल ने सत्र की अध्यक्षता की। कार्यक्रम संयोजन डॉ. फातिमा शिरीन और आभार प्रदर्शन संस्थान के समूह समन्वयक डॉ. पीबी मेश्राम ने किया।

टीएफआरआई के सभागार में पवित्र नर्मदा नदी के कायाकल्प की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने के पहले मिले सुझावों पर चर्चा करते अधिकारी। ● नईदुनिया

इन्होंने दिए मुख्य सुझाव: बैठक में एसएफआरआई के निदेशक डॉ. गिरिधर राव ने नर्मदा की बारहमासी सहायक नदियों की पहचान व नर्मदा के खुले जंगलों की बहाली के लिए पेड़ों के आस-पास घास, जड़ी-बूटियों, झाड़ियों के रोपण का सुझाव दिया। आरसीएफसी के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पीके शुक्ला ने उपलब्ध आंकड़ों पर भरोसा करने के साथ ग्राउंड ट्रूथिंग करने कहा। उन्होंने नर्मदा के आस-पास निजी भूमि में देशी प्रजातियों, बांस, औषधीय पौधे लगाने का सुझाव दिया। कान्हा टाइगर रिजर्व के सहायक निदेशक एसके सिन्हा ने प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यानों के बफर जोन में भूमि उपयोग में बदलाव व नमी संरक्षण उपाय के लिए कृषि वानिकी मॉडल को शामिल करने का सुझाव दिया। जेएनकेवीवी के डॉ. एसडी उपाध्याय ने एग्रोफोरेस्ट्री और औषधीय पौधों से संबंधित मॉडल के लिए उत्पादक प्रणालियों में गैर उत्पादक अनाज का समर्थन करने का भरोसा दिया।

विभाग और संस्थान शामिल: केन्द्र और राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के विशेषज्ञ, नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, रानी अवंती बाई सागर परियोजना, सिंचाई, वन, मत्स्य और कृषि विभाग, मप्र राज्य प्रदूषण नियंत्रण और बिजली बोर्ड, आदिवासी विकास विभाग, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, कुलपति, प्रोफेसर, आईसीएआर संस्थानों (डीडब्ल्यूआर, एनबीएसएस, एलयूपी) के वैज्ञानिक और विश्वविद्यालयों के शिक्षाविदों ने नर्मदा के संबंध में अपने विचारों, अनुभवों और बाधाओं को साझा किया।

यह रहे मौजूद: चर्चा के दौरान धर्मशास्त्र राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के एचओडी डॉ. वीएस जीजीमोन, जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज से डॉ. आरके ग्रोवर, एनबीएसएस व एलयूपी से डॉ. एमएस रघुवंशी, डीडब्ल्यूआर से डॉ. सुशील कुमार, जेडएसआई के डॉ. सम्बथ और पीडब्ल्यूडी, राजस्व, नगर निगम, सिंचाई विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

नर्मदा नदी के कायाकल्प परियोजना के लिए बैठक संपन्न

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

जबलपुर ● उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में वानिकी हस्तक्षेप के माध्यम से नर्मदा नदी के कायाकल्प के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के लिए परामर्शी बैठक का आयोजन किया गया। डॉ. जी. राजेश्वर राव, एआरएस, निदेशक, टीएफआरआइ द्वारा सभी का स्वेलकम किया गया। सी. बेहरा, आइएफएस और परियोजना नोडल अधिकारी ने नर्मदा के चारों ओर भूमि उपयोग, कार्य के दायरे और उद्देश्यों के बारे में अवलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने प्राकृतिक, कृषि और शहरी परिदृश्यों के लिए सफल वानिकी संबंधित मॉडल के समावेश के बारे में भी जानकारी दी। विभिन्न केंद्र और राज्य सरकार के विभागों के विशेषज्ञ, नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, रानी अवंती बाई सागर परियोजना, सिंचाई, वन, मत्स्य और कृषि विभाग, मध्य प्रदेश राज्य प्रदूषण नियंत्रण और बिजली बोर्ड और आदिवासी विकास विभाग, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षाविदों ने नर्मदा के संबंध में अपने विचारों और अनुभवों और बाधाओं को साझा किया।

झाड़ियों का रोपण किया जाए

प्रो. पीडी जुयाल, कुलपति, नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय ने अध्यक्षता की। वहीं डॉ. गिरिधर राव, पीसीसीएफ और निदेशक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने अध्ययन से पहले बारहमासी सहायक नदियों की पहचान करने और नर्मदा के आसपास खुले जंगलों की बहाली के लिए पेड़ों के पास घास, जड़ी-बूटियों और झाड़ियों के रोपण को भी शामिल करने का सुझाव दिया। डॉ. पीके शुक्ला, आइएफएसए क्षेत्रीय निदेशक, आरसीएफसीए मध्य क्षेत्र, जबलपुर, ने अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। एसके सिन्हा, सहायक निदेशक कान्हा टाइगर रिजर्व ने मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यानों के बफर जोन में भूमि उपयोग में बदलाव और नमी संरक्षण उपायों के लिए कृषि वानिकी मॉडल को शामिल करने का सुझाव दिया। इसके अलावा एग्रोफॉरेस्ट्री, औषधीय पौधों से संबंधित मॉडल के लिए उत्पादक प्रणालियों में गैर-उत्पादक अनाज का समर्थन करने पर भी बात हुई।

राज एक्सप्रेस | महानगर रविवार, 2 जून, 2019 www.rajexpress.co 5 जबलपुर

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में परामर्शी बैठक का आयोजन

जबलपुर। वानिकी के माध्यम से नर्मदा नदी के कायाकल्प के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट डीपीआर तैयार करने के लिए उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान टीएफआरआई द्वारा एक बहुपक्षीय परामर्श बैठक का आयोजन किया गया। डॉ. जी. राजेश्वर राव, एआरएस निदेशक टीएफआरआई ने वैज्ञानिक और तकनीकी सुझावों को शामिल करने का अनुरोध किया। आईएफएस और परियोजना नोडल अधिकारी सी. बेहरा ने नर्मदा के चारों ओर भूमि उपयोग कार्य के दायरे और उद्देश्यों के बारे में अवलोकन प्रस्तुत किया। बैठक में विविध विभागों, संस्थानों प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों ने अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. फातिमा शिरीन और धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. पी.बी. मेश्राम, समूह समन्वयक टीएफआरआई द्वारा किया गया।